ज्ञान शांति मैत्री

ICSSR
Indian Council of Social Science Research

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता

और

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

के संयुक्त तत्वावधान में

25-26 मार्च, 2025 को आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

“स्त्री पहचान : सतत संघर्ष की परिणति”

क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता
REGIONAL CENTRE KOLKATA
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)
MAHATMA GANDHI ANTARRASHTRIYA HINDI VISHWAVIDYALAYA, WARDHA (MAHARASHTRA)
(A CENTRAL UNIVERSITY ESTABLISHED BY PARLIAMENT BY ACT NO. 3 OF 1997

पंजीयन की अंतिम तिथि
21.03.2025

पंजीयन लिंक
https://forms.gle/LLMXt94mDz8X6HoC6

25–26 मार्च, 2025
मंगलवार–बुधवार

राधानाथ सिकदर तेंज़िंग नॉर्गे भवन
विवेकानंद युवा भारती क्रीड़ांगण
सॉल्ट लेक स्टेडियम, कोलकाता

स्त्री पहचान : सतत संघर्ष की परिणति

आजादी के अमृत महोत्सव में स्त्री पहचान के सतत संघर्ष को साहित्य,संस्कृति और फिल्म के माध्यम से भारतीय इतिहास के उन तत्वों के उत्खनन की जरुरत है जिनसे भारतीय संस्कृति निर्मित होती है। वर्तमान भारतीय समाज में आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता के नाम पर जिस संस्कृति को हमारे साहित्य में, फिल्मों में जगह मिली है, उनके विश्लेषण करने की आज बेहद आवश्यकता है ताकि संस्कृति के उन अवयवों की तलाश सुनिश्चित हो सके जिनसे भविष्य के भारत में स्त्री की सुदृढ़ पहचान के निर्माण में एक सुस्पष्ट दृष्टि मिल सके।

साहित्य, सिनेमा और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं में आये बदलावों पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन किया जा रहा है। इस संगोष्ठी में स्त्री पहचान, सतत संघर्ष की परिणति को समूचे विश्व में कला, संस्कृति और फिल्म, साहित्य के माध्यम से फिल्म लेखन, साहित्य के माध्यम से इतिहास लेखन और इतिहास लेखन में फिल्म और साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर विभिन्न विषय-विशेषज्ञों के माध्यम से विचार विमर्श किया जाएगा।

भारत में सुधारवादी आंदोलनों की शुरुआत स्त्रियों और स्त्री शिक्षा को केंद्र में रखकर की गई थी लेकिन इसके पीछे स्कॉटिश इतिहासकार जेम्स मिल की किताब 'हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया' थी जो किसी समाज के उन्नत होने के मानक के रूप में स्त्री की दशा को चिन्हित करती थी और भारतीय सामाजिक स्थितियों में स्त्रियों की दुर्दशा का चित्रण करती है। इस ओरिएंटल नजरिए की फिक्र करने वाले सभ्यजनों ने भारतीय स्त्रियों की दशा में सुधार करने के प्रयास जारी कर दिए। सुधारवादी आंदोलनों ने बाल विवाह निषेध, विधवा पुनर्विवाह, सती प्रथा का निषेध, स्त्री शिक्षा और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ संघर्ष जारी किया। भारत में स्त्री शिक्षा या बालिका शिक्षा का औपचारिक इतिहास देखा जाए तो 1830 में पुणे के शनिवार वाडे में एक विद्यालय चलाया जाता था जहाँ सात से आठ बालिकाएं अध्ययन करती थीं जो प्रिविलेज तबके की थीं, उन्हीं की शिक्षा के लिए यह विद्यालय चलाया जाता था। इसके बाद बंगाल में 1847 में नबीन कृष्ण मित्रा और काली कृष्ण मित्रा ने बारासात (वर्तमान का 24 परगना) में एक प्राइवेट स्कूल खोला था। प्रारंभ में दो ही बालिकाओं ने प्रवेश लिया था जिनमें से एक नबीन कृष्ण मित्रा की बेटी कुंतीबाला थी। ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले सिंथिया फैरार से अत्यंत प्रभावित हुए जो बोस्टन शहर से भारत आई थी और तमाम विरोधों के बाद भी बॉम्बे के स्कूल में अनोखे तरीके से बालिकाओं को पढ़ा रहीं थीं। सिंथिया फैरार से प्रभावित हो 1848 में पुणे के बुधवार पेठ में सावित्रीबाई और ज्योतिबा फुले ने डिप्रेस्ड क्लास के बच्चों के लिए एक विद्यालय आरंभ किया। इसके पूर्व जो विद्यालय थे वो प्रिविलेज तबके के लिए ही थे। सावित्रीबाई फुले इस विद्यालय की प्रथम शिक्षिका बनी। 3 जुलाई 1857 को फुले दंपति ने पहले बालिका विद्यालय का शुभारंभ किया था। स्त्री शिक्षा के विरोध में एक प्रिविलेज तबका था जो नहीं चाहता था कि महिलाएं और बालिकाएं शिक्षित हों तथा महिलाओं की सामाजिक हैसियत में कोई बदलाव आए, वहीं विद्यालय के लिए जमीन देने वाले और सहयोग करने वालों की कमी नहीं थी। वैश्विक पटल पर भी महिलाओं की शिक्षा को लेकर संघर्ष जारी थे, काफी कुछ लिखा जा रहा था और प्रयास किए जा रहे थे। 1764 में कैथरीन (पीटर तृतीय रूस के शासक की पत्नी) ने सेंट पीटर्सबर्ग में कुलीन लड़कियों के लिए एक आवासीय विद्यालय खोला और इसके बाद

मध्यमवर्गीय परिवारों की लड़कियों के लिए मास्को में विद्यालय खोला। इन विद्यालयों में सिलाई बुनाई शिक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा था। कैथरीन के अनुसार स्त्रियों के लिए शिक्षा इसलिए आवश्यक है कि 'स्त्रियां स्पष्टता से सोच सकें और स्पष्ट सोच सकने वाली स्त्री अधिक आत्म संयमी, शालीन,बलिदानी और बेहतर मां होगी। कैथरीन लिखती है कि 'घर में हर कोई, यानी गृह स्वामिनी, बच्चे और दास को घर के मुखिया या मालिक को अपने संरक्षण और दाता के रूप में प्यार करना चाहिए'। कैथरीन ने स्त्री-शिक्षा के लिए आधारभूत ढांचा खड़ा करते हुए भी रूसी समाज में व्याप्त रूढ़िवादिता या कहे पितृसत्ता को आगे बढ़ाने का काम ही किया। पितृसत्तात्मक समाज में शायद लोकप्रिय होने की यह एक शर्त भी है कि स्त्रियों का परम्परागत स्थान बदलने की कोशिश न की जाए और स्टीरियोटाइप को बढ़ावा दिया जाए ।

स्त्री पहचान के संघर्ष को वैश्विक पटल पर समझने का प्रयास तो हुआ है पर वर्तमान में स्त्री पहचान का संघर्ष और विश्व दृष्टि को लेकर कई प्रश्न आज भी बने हुए हैं, जिन पर विचार किया जाएगा।

सत्र विभाजन

25 मार्च 2025

उद्घाटन सत्र

(प्रातः 11.00 से अपराह्न : 12.00 तक)

स्त्री पहचान, सतत संघर्ष की परिणिति

प्रथम तकनीकी सत्र

(अपराह्न : 12.00 से 01.30 तक)

स्त्री प्रश्नों की वैश्विक अभिव्यक्ति

द्वितीय तकनीकी सत्र

(अपराह्न : 03.00 से 05.00 तक)

विभिन्न विचारकों के नजरिये में स्त्री पक्ष

26 मार्च 2025

तृतीय तकनीकी सत्र

(प्रातः 11.00 से अपराह्न : 01.00 तक)

नारीवादी विमर्श : साहित्य, कला और संस्कृति

चतुर्थ तकनीकी सत्र

(अपराह्न : 02.00 से 04.00 तक)

समकालीन स्त्री विमर्श, मुद्दे और संघर्ष

समापन सत्र

(अपराह्न : 04.00 से 05.00 तक)

उप-विषय (SUB THEMES)

1. राष्ट्रवादी विमर्शों में महिलायें
2. स्त्री और विकास
3. समाज में जाति, वर्ग और जेंडर
4. नयी भारतीय स्त्री : राष्ट्र निर्माण के संदर्भ में
5. स्त्री स्वतंत्रता, प्रतिरोध और आंदोलन
6. साहित्य, सिनेमा और रंगमंच में स्त्री
7. नवजागरण और स्त्री प्रश्न
8. पर्यावरणीय नारीवाद
9. सामाजिक यथार्थ और स्त्री जीवन
10. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में स्त्री
11. पितृसत्ता का समकालीन स्वरूप और स्त्री
12. युद्ध और स्त्री
13. विश्व शांति में महिलाओं की भूमिका
14. स्त्री और आधुनिकता
15. स्त्री विमर्श के विभिन्न आयाम
16. विश्व में महिला अधिकार आंदोलन
17. उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन में महिलायें
18. भारत में महिला अधिकार आंदोलन
19. महिलाओं के संवैधानिक अधिकार और महिला संगठन
20. महिला सशक्तिकरण के सरकारी और गैर सरकारी प्रयास

शोध-पत्र प्राप्ति की अंतिम तिथि :	21-03-2025
शोध-पत्र संप्रेषण हेतु ई-मेल :	rckseminar@gmail.com
शोध-पत्र का फॉन्ट :	Kokila (Hindi-16) Times New Roman (English-12)

पंजीयन शुल्क जमा करने हेतु बैंक विवरण :

Bank : Bank of India (Salt Lake Branch)
A/C No. : 402810110002874
IFSC : BKID0004249
पंजीयन लिंक : https://forms.gle/LLMXt94mDz8X6HoC6

पंजीयन शुल्क विवरण

श्रेणी	ऑफ लाइन पत्र	ऑन लाइन पत्र वाचन
विद्यार्थी	₹ 200	₹ 150
शोधार्थी	₹ 500	₹ 400
शिक्षक	₹ 1000	₹ 500

संरक्षक

प्रो. कुमुद शर्मा
कुलपति
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

आयोजन समिति

डॉ. अमित राय
एसोसिएट प्रोफेसर

डॉ. अभिलाष कुमार गोंड
सहायक प्रोफेसर

डॉ. आलोक कुमार सिंह
अनुभाग अधिकारी

संगोष्ठी संयोजक

डॉ. चित्रा माली
सहायक प्रोफेसर
(मो. 9422905721)

आयोजक

ज्ञान शांति मैत्री

क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
ऐकतान, आईए-290, सेक्टर-3, सॉल्ट लेक
कोलकाता-700097 (पश्चिम बंगाल)